अमोल कथन

मानस की कतिपय महिलाएं

डॉ. सतीश कुमार

Dr. Satish Kumar

Priceless Utterances

Women in Manas

अमोल कथन

मानस की कतिपय महिलाएं

डॉ. सतीश कुमार

Dr. Satish Kumar

दृशी प्रकाशन

अमोल कथन : मानस की कतिपय महिलाएँ

डॉ. सतीश कुमार

© डॉ. सतीश कुमार

ISBN : 978-81-973776-7-9

पहला संस्करण : जून, 2024

कवर डिजाइन : कुलदीप कुमावत

चित्र : रोमी भागवानी, भोपाल (म.प्र.)

प्रकाशक :
दृशी प्रकाशन
104, सिद्धार्थ नगर
सांगानेर, जयपुर-302029 (राजस्थान)

+91-8209640202
drishiprakashan@gmail.com

मूल्य : ₹ **450/-** (भारत में), **U.S. $ 10** (विदेश में)

AMOL KATHAN : MANAS KI KATIPAY MAHILAYEN
by Dr. Satish Kumar

स्व. श्रीमती जयन्ती देवी

(1922–1986)

पूज्य माँ (अम्मा जी) को
सादर समर्पित

अनुक्रम

प्रस्तावना *06*

रति : काम चिता पर प्रणायोन्मुख शंकर 14

शतरूपा : सोइ सुख, सोइ गति, सोइ भगति 26

सुमित्रा : अवध तहां जहं राम निवासू 38

कैकेयी : होहुं राम सिय पूत पतोहू 48

अनसूया : धीरज धर्म मित्र अरु नारी 56

शबरी : मानउं एक भगतिकर नाता 64

शूर्पणखा : नगण्य नहीं रिपु, रुज अहि पावक 72

स्वयंप्रभा : पैहहु सीतहि जनि पछिताहू 78

सुरसा : तुम्ह बल बुद्धि निदान 88

लंकिनी : जो सुख लव सत्संग 98

त्रिजटा : एहि के हृदय बसति बैदेही 106

मंदोदरी : अग जग नाथ मनुज कर जाना 114

लेख : ढोल गँवार सूद्र पसु नारी सकल ताड़ना के अधिकारी 124
– पं. परशुराम तिवारी

प्रस्तावना

तुलसीकृत रामचरित मानस में चर्चित कतिपय महिलाओं के कथन व उनसे जुड़े जीवन-प्रसंगों के अध्ययन की प्रेरणा मुझे अपनी श्रद्धेय मां (अम्माजी) से मिली थी। आज वे हमारे बीच नहीं हैं, किंतु उनसे जुड़े प्रसंग, संवाद व उनकी ममतामयी छवि आज तक मनोमस्तिष्क पर छायी रहती है। घर का छोटा-मोटा काम हो अथवा गम्भीर पारिवारिक निर्णय- मां की कार्यशैली एक जैसी थी- सुव्यवस्थित, सकारात्मक एवं गरिमापूर्ण। अपनी मां की सम्पूर्ण प्रेरणा व ममता को लिपिबद्ध करना किसी लेखनी के वश में नहीं, चाहे वह कितनी भी सशक्त क्यों न हो। हां, मां की याद में डूबकर हर किसी की लेखनी उतनी सशक्त जरूर हो जाती है कि उस ममतामयी छवि को मनभावन शब्दों से सम्मानित करे। नियमित रूप से सुबह उठकर मां का अंगुलियों पर द्वादश अक्षर मंत्र (ओम नमो भगवते वासुदेवाय) का जाप और रात में सोने से पूर्व रामचरित मानस का श्रवण, उनके जीवनशैली का अभिन्न अंग था।

मेरे स्वर्गीय पिता (बाबूजी) उच्च शिक्षा प्राप्त, साहित्यप्रेमी व मानस-मर्मज्ञ थे। मुझे अक्सर उनसे मानस के सुविख्यात राम-भक्त पात्रों के बारे में चर्चा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री भरत, लखन, हनुमान, कागभुशुण्डि इत्यादि सभी भक्त हर कालखंड में प्रशंसनीय रहेंगे। इसमें तनिक भी संदेह नहीं, किंतु मां से मैं उत्सुकतावश और कुछ हद तक उन्हें उत्तेजित करने के लिये मानस की उन महिला पात्रों की चर्चा व भर्त्सना करता था जो कि प्रभु श्रीराम व सीता जी की सहायक नहीं थी। उदाहरणार्थ- रानी कैकेयी, शूर्पणखा, सुरसा, लंकिनी, मंदोदरी आदि। मां की

Preface

My mother always encouraged me to study Ram Charita Manas-the classic work of the great poet Tulsidas and narrate the attributes of women characters described in the book. She is no more with us but I distinctly feel her affectionate, loving and reassuring presence always around me. It is almost impossible for anybody to express - howsoever mighty a pen that he or she may wield- what a mother's presence meant for them in terms of a perennial persistence and unconditional source of all emotional, physical and mental support. On the other hand, lost in the loving and inspiring memories of their mothers anybody can write about her with soothing ease and effortlessly chosen words and pay tributes and heighten her visibility and reverence.

I vividly remember my mother getting up early in the morning, chanting "Om Namo Bhagwate Vasudevay" Lord Krishna's twelve lettered prayer and using her fingers (Kar-Mala) to count the number of chants. At night, before going to sleep she would listen to selected verses from the last chapter of Ram Charit Manas that my father used to recite regularly. Irrespective of the nature of task whether routine household chores or important decisions regarding the future of her children, the working style of my mother was consistent—organised, logical and graceful. My father was a highly qualified, literary individual with in-depth knowledge and understanding of Ram Charita Manas. On many occasions, I was fortunate to hold discussions with him on famous devotees of Sri

औपचारिक स्कूली शिक्षा सीमित थी। अत: वह इस विषय पर लम्बी बौद्धिक विवेचना नहीं करती थीं। मैं विस्मित व अभिभूत हो जाता था, उनकी मौलिक सोच, प्रभु श्रीराम पर अटूट श्रद्धा व रामचरित मानस के प्रति असीम आदर भाव से। वह पूरे विश्वास के साथ कहती थीं कि रामचरित मानस का कोई भी पात्र राम-विमुख नहीं हो सकता। आरंभ से अंत तक इस ग्रंथ के आराध्य व प्रतिपाद्य देव प्रभु श्रीराम ही हैं।

जेहि महुं आदि मध्य अवसाना।
प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना।।

(उत्तरकांड, चौपाई-6, दोहा-61)

हो सकता है सतही तौर पर किसी पात्र का आचरण राम व सीता के विरोध में घटित होता हुआ हो, किंतु वास्तव में वह प्रभु श्रीराम की लीला से ही प्रेरित है और उनका अनुसरण करता है। मानस के हर पात्र को राम ने परखा और अंगीकार कर कृतार्थ किया। इसमे गलती की कोई संभावना मां को कभी नहीं लगी।

प्रस्तुत पुस्तक में वर्णित सभी महिला पात्रों का कथन व चरित्र उनके उपर्युक्त कहे विचारों का लगभग पूर्ण समर्थन करता है। रानी कैकेयी एक महत्वपूर्ण साधन बनी, प्रभु श्रीराम के यश सूर्य को उदित व प्रखर करने में। राक्षसी शूर्पणखा ने लंकापति रावण को राम-विरोधी तो बनाया किंतु उसे राम-विमुख न कर पायी। अंत तक रावण प्रभु श्रीराम का नाम लेकर उन्हें रण के लिये पुकारता रहा। शूर्पणखा ने स्वयं श्रीराम के रूप, गुण, शौर्य व आचरण का अनुपम वर्णन किया है, जो ब्रह्मर्षि विश्वामित्र जी द्वारा रचित राम-रक्षा स्तोत्र में प्रतिबिम्बित है।

सुरसा व लंकिनी राक्षसी राम कार्य में, शुरू में बाधा अवश्य थीं, किंतु आगे चलकर उन्होंने राम दूत हनुमान् को आशीष व अलौकिक उद्गार दिये। मंदोदरी ने श्रीराम को चराचर जगत का स्वामी जाना, किंतु अनेक प्रयास करने पर भी अपने पति रावण को यह तथ्य समझा न पायी। मंदोदरी द्वारा रणभूमि में वीरगति प्राप्त रावण के रण-कौशल व शौर्य का वर्णन तथा सर्वज्ञ, शरणागतवत्सल प्रभु श्रीराम की स्तुति दोनों ही अद्भुत हैं।

इसी क्रम में प्रस्तुत पुस्तक में वर्णित कई अन्य महिला पात्रों ने श्रीराम की अलौकिक स्तुति कर मनोवांछित वरदान पाये। शबरी से भगवान राम ने भक्ति और